भाषा विज्ञान की परिभाषा -

भाषा विज्ञान के अन्तर्गत भाषा का ही अध्ययन-विशेष किया जाता है। इस संबंध में कतिपय भारतीय और विदेशी विद्वानों के भाषाविज्ञान संबंधी मतों का अवलोकन किया जाना प्रासंगिक है।

इस संबंध में राबिन्स महोदय का कथन है कि - "General linguistics is concerned with human languages as a universal and recognizable part of human behaviour and of the human faculties, perhaps one of the most essential of human life as we know it, and one of the most far-reaching of human-capabilities in relation to the whole span of mankinds achievements. "

Charels F. Hockett - "For a small group of specialists knowing about language is an end in itself. These specialists call themselves linguists and the organised body of information about language which their investigations produce is called linguistics."

Block and Trager us Hkh dgk gS & "When he (linguist) has described the facts of speech such a way as to account for all the utterances used by the members of a social group, his description is what we call the sysetm or grammar of language.

भारतीय मनीषियों ने भी भाषाविज्ञान को परिभाषाबद्ध करने का प्रयास किया है। इनमें सर्वप्रथम डाॅ०श्यामसुन्दरदास आते हैं। उन्होंने कहा है -’’भाषा विज्ञान भाषा की उत्पत्ति, उसकी बनावट और उसके ह्रास की व्याख्या करता है।‘‘ ’भाषा विज्ञान‘ में वे लिखते हैं -’’भाषाविज्ञान उस शास्त्र को कहते हैं, जिसमें भाषा मात्र के भिन्न-भिन्न अंगों और स्वरूपों का विवेचन तथा निरूपण किया जाता है।......सारांश यह है कि भाषाविज्ञान की सहायता से हम किसी भाषा का वैज्ञानिक दृष्टि से विवेचन, अध्ययन और अनुशीलन करना सीखते हैं।‘‘

एक स्थान पर वे तुलनात्मक भाषाविज्ञान को ही भाषाविज्ञान का नाम देते हैं क्योंकि उनका आशय है कि बिना तुलना के अध्ययन में वैज्ञानिकता नहीं आ सकती है किन्तु वह अपने आप में भ्रमपूर्ण है क्योंकि वैज्ञानिक अध्ययन सदा तुलनात्मक होना आवश्यक नहीं है।

डाॅ० बाबूराम सक्सेना - ’’भाषा तत्वों का अध्ययन भाषाविज्ञान का अध्ययन है।‘‘ किन्तु भाषाविज्ञान के अन्तर्गत हम इससे भी आगे भाषा का विकास आदि पर भी विचार करते हैं। अतः यह परिभाषा भी अव्याप्ति दोष से पूर्ण प्रतीत होती है। दूसरे, इसमें विषय का प्रतिपादन है, न कि स्वरूप का।

डाॅ०उदयनारायण तिवारी - ये अपनी पुस्तक ’भाषा-शास्त्र की रूपरेखा‘ में लिखते हैं कि भाषाविज्ञान उस शास्त्र को कहते हैं जिसमें हम भाषा-मात्र के भिन्न-भिन्न अंगों का विवेचन, अध्ययन और अनुशीलन करना सीखते हैं। यह परिभाषा डाॅ०श्यामसुन्दरदास की परिभाषा के निकटवर्ती ही है, जो पूर्णतः स्पष्ट नहीं है।

डाॅ० भोलानाथ तिवारी कहते हैं -’’भाषाविज्ञान वह विज्ञान है जिसमें भाषा-विशिष्ट, कई और सामान्य-का समकालिक, ऐतिहासिक, तुलनात्मक और प्रायोगिक दृष्टि से अध्ययन और तद्विषयक सिद्धान्तों का निर्धारण किया जाता है।‘‘

इसी प्रकार की परिभाषा डाॅ० मंगलदेव शास्त्री की है -’’भाषा विज्ञान उस विज्ञान को कहते हैं जिसमें (1) सामान्य रूप में मानवीय भाषा (2) किसी विशेष भाषा की रचना और इतिहास का, और अन्ततः (3) भाषाओं या प्रादेशिक भाषाओं (या बोलियों) के वर्गों को पारस्परिक समानताओं और विशेषताओं का तुलनात्मक विचार किया जाता है।‘‘

प्रो० देवेन्द्रनाथ शर्मा के अनुसार - ’’भाषाविज्ञान का सीधा अर्थ है भाषा का विज्ञान और विज्ञान का अर्थ है विशिष्ट ज्ञान। इस प्रकार भाषा का विशिष्ट ज्ञान भाषाविज्ञान कहलाएगा।‘‘

वास्तव मंे इन परिभाषाओं में ’विशिष्ट‘ और ’सामान्य‘ या ’भाषा मात्र‘ जैसे शब्द व्याख्यापेक्ष्य हैं जो परिभाषा में अवांछित समझे जाते हैं; साथ ही, भाषाविज्ञान की पद्धतियों का निर्देश परिभाषा में कहाँ तक वांछनीय है, यह भी विचारकों के लिए विचारणीय विषय नहीं है। अतः इन्हें भी भाषाविज्ञान की उपयुक्त परिभाषा नहीं माना जा सकता।

किसी विषय की परिभाषा देना इतना सरल कार्य नहीं है किन्तु एक बात स्पष्ट है कि ’भाषाविज्ञान भाषा मात्र का व्यवस्थित अध्ययन‘ है। इसी आधार पर जब तक कोई समुचित परिभाषा हमारे समक्ष नहीं आती, तब तक भाषा-विज्ञान का अध्ययन पूर्णतया स्पष्ट न होगा। फिर भी भाषाविज्ञान की परिभाषा कुछ इस प्रकार से दी जा सकती है -’’भाषाविज्ञान भाषाअध्ययनार्थ एक गत्यात्मक विज्ञान है, जिसका विकासात्मक पल्लवन देश-काल के परिवेश में होता है।‘‘